SA – I (2016-17)
Subject :- Sanskrit
Class – VII

नवमः पाठः – वाक्रत्नानि

(1) विद्या ददाति विनयं - - - - - - धर्मः ततस्सुखम् ॥

अर्थ :- विद्या से विनम्रता प्राप्त होती है, विनम्रता से योग्यता आती है अर्थात विनय शीलता से व्यक्ति किसी कार्य के लिए सुयोग्य बन जाता है। योग्यता से वह धन प्राप्त करता है, धन से धर्म तथा धर्म से उसे सुख प्राप्त होता है।

(2) न तथा शीतल सलिलं - - - - - - मधुरभाषिणी वाणी ॥

अर्थ :- कहा गया है कि न ठण्डा पानी, न चन्दन का रस और न ही शीतल छाया पुरुष को उस प्रकार आनन्दित करती है जिस प्रकार कि मीठी वाणी। अर्थात सब की अपेक्षा मीठी वाणी में अधिक आह्लादित करने की क्षमता है।

(3) यः पठति लिखति - - - - - - विकास्यते बुद्धिः ॥

अर्थ :- जो व्यक्ति पढ़ता है लिखता, पूछता तथा प्रतिप्रश्न करता है, ज्ञानी पुरुषों के संपर्क में रहता है, उसकी बुद्धि सूर्य की किरणों के द्वारा कमल के पत्तों की तरह विकसित होती है।

(4) लुब्धस्य नश्यति - - - - - - नराधिपतेः ॥

अर्थ :- लोभी व्यक्ति का यश नष्ट हो जाता है, दूसरों की निंदा करने वाले व्यक्ति की मित्रता समाप्त हो जाती है, आलसी और कर्महीन व्यक्ति का परिवार नष्ट हो जाता है, धन को ही सबकुछ मानने वाले व्यक्ति का धर्म नष्ट हो जाता है, विलासी (भोगी) व्यक्ति का विद्यारूपी फल नष्ट हो जाता है, कंजूस व्यक्ति का सुख नष्ट हो जाता है तथा अहंकारी राजा का राज्य नष्ट हो जाता है।

(5) लोभश्चेदगुणेन - - - - - - तीर्थैन किम् ॥

अर्थ :- यदि व्यक्ति लालची है तो उसमें अन्य अवगुण स्वतः ही आ जाते हैं, परनिन्दा करने वाला है तो अन्य पापों से क्या? अर्थात परनिन्दा करना भी एक पाप है, - - - - - -

यदि सत्य है तो अन्य तपस्या की आवश्यकता नहीं और मन में पवित्रता है तो अन्य तीर्थों की कोई आवश्यकता नहीं।

प्रश्नोत्तर

(I) का विनयम् ददाति?
उत्तर- विद्या विनयम् ददाति।

(II) पात्रत्वात् मानवः किम् प्राप्नोति?
उत्तर- पात्रत्वात् मानवः धनम् प्राप्नोति।

(III) कस्य बुद्धिः विकसति?
उत्तर- यः पठति, लिखति, पृच्छति, परिपृच्छति, पण्डितान् च उपाश्रयति, तस्य बुद्धिः विकसति।

(IV) मधुरा वाणी कम् प्रह्लादयति?
उत्तर- मधुरा वाणी पुरुषम् प्रह्लादयति।

(V) पिशुनस्य का नश्यति?
उत्तर- पिशुनस्य मैत्री नश्यति।

(VI) कस्य राज्यं नश्यति?
उत्तर- प्रमत्तसायकस्य नराधिपतेः राज्यम् नश्यति।

संस्कृत भाषा में अनुवाद -

(I) हितकारिणी वाक्यानि औषधिवत् भवन्ति।
(II) पठनेन लेखनेन च बुद्धिः विकसति।
(III) मधुरा वाणी प्रसन्नताम् ददाति।
(IV) चन्दनस्य रसः शीतलताम् ददाति।
(V) कृपणस्य मित्रता / मैत्री न भवति।
(VI) सत्येन समम् तपः नास्ति।
(VII) विद्यया वयम् विनम्रताम् वैभवम् च प्राप्नुमः।

7th दशमः पाठः 10 सुरसरिता (गंगा) (3) VII – SA-I

पाठ का हिन्दी में अनुवाद –

भारत की धरती पर बहुत-सी नदियाँ बहती हैं। उन सभी नदियों में मैं एक नदी हूँ। 'गंगा' नाम से मैं संसार में प्रसिद्ध हूँ। लोग मानते हैं कि मैं पवित्र जल वाली नदी हूँ। मेरे जल के प्रभाव किनारे पर स्थित अनेक नगर पवित्र तीर्थ-स्थान हो गए। ~~सब~~ हिमालय पर्वत के 'गंगोत्री' नामक स्थान से मैं उत्पन्न होती हूँ। मैं यहाँ छोटे रूप में बहती हूँ। धीरे-धीरे आगे बहुत-सी नदियाँ मुझमें आ मिलती हैं।

जब मैं हरिद्वार तीर्थ में प्रवेश करती हूँ तो बड़ा रूप धारण कर लेती हूँ। इस तीर्थ पर लाखों लोग मेरे जल से स्नान करते हैं और अमृत-तुल्य जल पीकर अपने भाग्य को धन्य बनाते हैं।

'प्रयाग' नामक स्थान पर मैं यमुना नदी के साथ मिलकर आगे बहती हूँ। इस स्थान पर बारह वर्षों के बाद महाकुम्भ पर्व होता है। तब लोगों की भीड़ यहाँ आकर संगम में स्नान करती है। अपने पाप एवं गंदगी को धोती है।

लगातार बहती हुई और लोगों को प्रसन्न करती हुई मैं अन्त में सागर के जल में प्रवेश कर जाती हूँ। पुराणों में मेरा महत्व विशेष रूप से वर्णित है। उनमें मेरा नाम 'देवनदी' है। पुराण की कहानी के अनुसार मैं इस पृथ्वी पर राजा भगीरथ की तपस्या के प्रभाव से बहुत प्रयत्न से स्वर्ग से भगवान शिव के सिर में समाहित हो गयी। उसके बाद शिव के केश (बाल) से बाहर निकलकर धरती पर आ॰ गयी। इसलिए लोग मुझे 'भागीरथी' भी कहते हैं।

प्रतिदिन हजारों लोग श्रद्धा से मेरे जल से स्नान करते हैं और पूजा करते हैं। लोग मेरे जल को ग्रहण करके अपने घर लाते हैं। बहुत समय बीत जाने पर ~~भी~~ भी यह जल दूषित नहीं होता है।

मेरे प्रवाह के मार्ग से निकाली गयी नहरें

(ii) गङ्गा हिमवद्भ्यः पर्वतेभ्यः भूत्वा वहति।

(iii) अस्याम् सदा जलम् भवति।

(iv) गङ्गा समुद्रे मिलति।

(v) अनेकाः नद्यः गङ्गायाम् मिलन्ति।

खेतों की सिंचाई करती हैं जिससे भारत की धरती उपजाऊ होकर प्रचुर अन्न का उत्पादन करती है।

अभ्यासकार्यनि

लिखितम् ⇒

4. एकपदेन उत्तरत। (एक पद में उत्तर दीजिए)

उत्तर ⇒

(i) सुरसरिता।

(ii) गंगोत्री-स्थानात्।

(iii) यमुनायाः/ सूर्यतनयायाः।

(iv) गङ्गा-जलम्।

(v) माघमासे।

5. एकवाक्येन उत्तरत। (एक वाक्य में उत्तर दीजिए।)

उत्तर ⇒

(i) हरिद्वारतीर्थे जनाः गङ्गाजले स्नानं कुर्वन्ति, जलम् पिबन्ति, निजभाग्यं जीवनम् च धन्यं कुर्वन्ति।

(ii) पुराणेषु गङ्गायाः महत्त्वम् विशेषरूपेण वर्णितमस्ति।

(iii) प्रतिदिनम् सहस्रशः जनाः श्रद्धया गङ्गायाः जले स्नानम् कुर्वन्ति, पूजार्चनाम् च कुर्वन्ति।

(iv) गंगा (गङ्गा) राज्ञः भगीरथस्य तपः प्रभावात् स्वर्गात् भूतलम् आगता।

(v) निस्सारिताः कुल्याः क्षेत्राणि सिंचन्ति।

8. संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत। (संस्कृत में अनुवाद कीजिए)

उत्तर ⇒

(i) भारते हिमालयः पर्वतः अस्ति।

एकादशः
पाठः 11

आभाणकाः (लोकोक्तियाँ/कहावतें) 6

VII - SA-I

पाठ का हिंदी में अनुवाद —

1. आलस्य ही मनुष्यों के शरीर में रहने वाला सबसे बड़ा शत्रु है।
2. आग से घर के जलने पर कुँआ खोदना उचित नहीं है।
3. सभी गुण सोने का आश्रय लेते हैं। इसका लक्ष्यार्थ यह है कि धनवान व्यक्ति को सर्वगुण सम्पन्न माना जाता है।
4. बिना सोचे-समझे अचानक किसी काम को न करें, क्योंकि अविवेक (नासमझी) घोर आपत्तियों का स्थान है।
5. लोभ सभी प्रकार के अनर्थों की जड़ है।
6. माता और मातृभूमि दोनों स्वर्ग से भी बढ़कर हैं।
7. लोभ कभी समाप्त न होने वाला रोग है।
8. इस संसार में कभी भी शत्रुता (वैर-भाव) से शत्रुता शान्त नहीं होती।

अभ्यास-कार्यम्

लिखितम्

3. प्रश्नान् उत्तरत। (प्रश्नों का उत्तर दीजिए)

उत्तर ⇒

(i) मनुष्याणाम् रिपुः आलस्यम् अस्ति।

(ii) लोभः अनर्थानाम् मूलम् अस्ति।

(iii) जननी जन्मभूमिः च स्वर्गात् गरीयसी।

(iv) अनन्तकः व्याधिः लोभः अस्ति।

(v) वैरेण वैराणि न शाम्यन्ति।

(vi) वह्निना गृहे प्रदीप्ते कूपखननं न युक्तम्।

6. संस्कृतभाषायाम् अनुवादं कुरुत।
(संस्कृत में अनुवाद कीजिए।)

उत्तर→
(i) 1. आलस्यम् महत्तमः शत्रुः अस्ति।

(ii) 2. विवेकेन कार्यम् कुरु।

(iii) 3. धनम् आवश्यकम् भवति।

(iv) 4. लोभम् मा कुरु।

(v) 5. वैरम् समीचीनम् नास्ति।

(vi) 6. मातृभूमिः महती अस्ति।

****